महावीर सिंह 'दिवाकर'

जन्म तिथि - 16.06.1978
जन्म स्थान - बीकरण (भीलवाड़ा)
पिता का नाम - श्री शंभू सिंह
माता का नाम - श्रीमती रेवती कुँवर
मोबाईल नम्बर - 9413408422

चूनर सोने की सजी, सरसों झूमी खेत ।
बाण चलाया काम ने, बढ़ा हृदय में हेत ।।
बढ़ा हृदय में हेत, बहारें चहुँ दिस छायी ।
किसलय ने ली मस्त, जवानी की अँगड़ाई ।।
उपवन उपवन फूल, ले रही कलियाँ घूमर ।
खिला धरा का रूप, ओढ़कर पीली चूनर ।।

****

लाल गुलाबी बैंगनी , सतरंगों का रास ।
अंबर तक लो छा गया , धरती का उल्लास ।।
धरती का उल्लास , देवता लख हरषाए ।
बनकर राधे - श्याम , युगल हर युग में आए ।।
बौराए हैं लोग , बिन पिए हुए शराबी ।
दिखता कुल संसार , बैंगनी लाल गुलाबी ।।

****

साजन लाल गुलाल से , रँग दे मेरे गाल ।
खाले मीठी गूंझिया , भर लायी हूँ थाल ।।
भर लायी हूँ थाल , सजाकर मेवे मोदक ।
तेरा सोहक रूप , लगे मुझ को मन मोहक ।।
लेकर रंग अबीर , आज रँग डालो तन मन ।
अपने जैसा रंग , चढ़ा दो मुझ पर साजन ।।

****

नफ़रत मन की होलिका, और प्रेम प्रहलाद ।
प्रेम बचे नफ़रत जले, रखना इतना याद ।।
रखना इतना याद, युगों से रीत यही है ।
रही बुराई हार, भलाई जीत रही है ।।
जब तक है आबाद, दिलों में प्यार मुहब्बत ।
धू धू करके यार, जलेगी यूँ ही नफ़रत ।।

****

टेसू फूले नेह के, बौराया मन-बाग़ ।
रंग उमंगों से भरा, लो आया फिर फाग ।।
लो आया फ़िर फाग, कुँवारी यादें लेकर ।
बचपन ले लूँ मोल, कमाया सब कुछ देकर ।।
ढँकते मन-आकाश, गुलालों जैसे गेसू ।
दहक रहा है प्रेम, तुम्हारा मन में टेसू ।।

****

पूनम सावन मास की, लाई हर्ष अपार ।
रेशम की इक डोर में, चमका सच्चा प्यार ।।
चमका सच्चा प्यार, अनोखा बंधन राखी ।
सदियों जूनी रीत, युगों से अंबर साखी ।।
पुरखों के संस्कार, पीढ़ियों को सौंपे हम ।
फर्ज़ हमारा याद, दिलाती राखी पूनम ।।

****

बादल बीरा झूमकर, मिलने आया आज ।
धानी चूनर ओढ़कर, करती धरती नाज ।।
करती धरती नाज, बरसता नेह सनातन ।
अमर सदा है प्रेम, देख लो रीत पुरातन ।।
रीते थे सब ताल, सरोवर, छलका है जल ।
सावन में हर साल, बरसना बीरा! बादल ।।

****

सरहद तेरी लाज के, सैनिक पहरेदार ।
सीने पर जो झेलते, दुश्मन का हर वार ।।
दुश्मन का हर वार, विफल कर देते भाई ।
भेजें रक्षा-सूत्र, न सूनी रहे कलाई ।।
सीमा पर हैं पाँव, जमाए फ़ौजी अंगद ।
देंगे अपनी जान, आन पर तेरी सरहद ।।

****

कंबल चादर तानकर, पड़े रहो चुपचाप ।
ओढ़ रजाई दोवड़ी, करो राम का जाप ।।
करो राम का जाप, कड़ाके की है ठारी।
काँप रही है देह, हवा भी जैसे आरी ।।
चाय गर्म या सूप, बने हैं तन का संबल ।
सूरज दुबका आप, ओढ़कर बादल-कंबल ।।

****

छाया ऐसा कोहरा, सहमी-सहमी भोर ।
धुंध गज़ब की छा गई, देखो चारों ओर ।।
देखो चारों ओर, अँधेरा राह न सूझे ।
दिन है या है रात, पहेली कोई बूझे ।।
ओझल देखो धूप, ठंड ने खौफ़ दिखाया ।
धरती-अंबर एक, कोहरा ऐसा छाया ।।।

****